DOI: 10.51220/hjssh.v5i1.9

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 5 pp.81 -87, December, 2010, ISSN. 0975 - 9891

मौलाराम : पूर्वजों की पहचान का प्रश्न

जयजीत बड़थ्वाल
इतिहास विभाग
हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, परिसर पौड़ी।

Received: 25-11-2010 **Revised: 10-12-2010** **Accepted: 28-12-2010**

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में गढ़वाल के प्रसिद्ध चित्रकार श्री मौलाराम के पूर्वज श्यामदास तथा केहरदास जो कि मौलाराम के अनुसार मुगल शहजादे सुलेमान सुकोह के साथ गढ़राज्य में पहुँचे थे तथा जिन्हें लेखकों, इतिहासकारों ने कुशल चित्रकार बताया है, के विषय में खोजपूर्ण सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है।

Key Words- Maula Ram, Forefather's, Analysis

प्रायः सुधीजनों को यह लिखते पाया है कि मुगल शहजादे सुलेमान शिकोह के साथ गढ़राज्य पहुंचने वाले मौलाराम के पूर्वज श्यामदास तथा हरदास दक्ष चित्रकार थे।[1] यह एक आम धारणा सी बनती चली गई है। किन्तु मौलाराम के पूर्वजों श्यामदास व हरदास के विषय मे इस धारंणा का कि वे दक्ष अथवा नामवर चित्रकार थे गहन परीक्षण तथा विश्लेषण आवश्यक जान पड़ता है तथा समकालीन ऐतिहासिक स्रोतों एवं मौलाराम के लेखन के प्रकाश में इस धारणा की पड़ताल आवश्यक जान पड़ती है।

मुगल बादशाह शाहजहां के चार पुत्र दाराशिकोह, शाहशुजा, औरंगजेब तथा मुराद थे। समय–यमय पर शाहजहां के पुत्रो को विभिन्न दायित्व मिले थे किन्तु जिस समय उनमे आपसी संघर्ष प्रारम्भ हुआ उस समय शुजा बगांल का, औरंगज़ेब दक्षिण का तथा मुराद गुजरात के सूबेदार थे। शाहजहां के बड़े पुत्र दाराशिकोह को विभिन्न अवसरों पर साम्राज्य के भिन्न भिन्न सूबों की सूबेदारी सौंपी गयी थी किन्तु सम्राट ने प्रायः उसे अपने ही पास रखा तथा अपने जीवन के छियासठवें वर्ष के अवसर पर शाहजहां ने उसे शाह बुलन्द इकबाल की उपाधि से विभूषित किया उसे सोने के कसीदे की पेटी वाली खिलअत प्रदान की तथा एक सरबन्द प्रदान किया। अब तक शहजादा शाही सिंहासन के सामने कुर्सी पर बैठा करता था, किन्त अब तख्त के बराबर उसको एक सोने की कुर्सी पर बैठने का आदेश दिया गया।[2] आरम्भ से ही शाहजहां का दाराशिकोह के प्रति गहरा स्नेह और पक्षपात था और वह हर प्रकार से उसे प्रसन्न रखना चाहता था।[3] सितम्बर 1657 में शाहजहां बीमार पडा तथा एक सप्ताह तक उसकी दशा इतनी खराब रही कि नित्य लगने वाला शाही दरबार बन्द कर दिया गया तथा झरोखे में बैठकर प्रजा को दर्शन देना भी बादशाह के लिए सम्भव नही हुआ।[4] खॉफीखां लिखता है कि दारा अपने आप को तख्त का उत्तराधिकारी समझता था तथा पिता की बीमारी के अवसर का लाभ उठाकर उसने शासन सूत्र अपने हाथ में ले लिया फिर उसने बंगाल,

©SHARAD

गुजरात तथा दक्षिण के मार्ग पत्रवाहकों के लिए बंद कर दिए।[5] साम्राज्य में तरह–तहर की अफवाओं का बाजार गर्म हो गया तथा बहुत से लोगों ने यह विश्वास करने से इनकार कर दिया कि बादशाह अब जीवित है।[6] ऐसी दशा में शुजा ने अपने को बंगाल में तथा मुराद ने अपने आप को गुजरात में बादशाह घोषित कर दिया। औरंगजेब ने स्वयं को अभी बादशाह तो नही घोषित किया किन्तु उसने अपनी सेना सहित दक्षिण को छोडकर बादशाह के दर्शन करने के बहाने आगरा को कूच किया। शुजा भी बंगाल से अपनी सेनाओं के साथ बनारस तक आ पहुंचा उसे रोकने के लिए दारा ने अपने बडे पुत्र सुलेमाषिकोह को बाइस हजार सैनिकों के साथ रवाना किया उसके साथ राजा जयसिंह को भी भेजा गया। बहादुरपुर नामक स्थान पर शुजा के शिविर में अचानक धावा बोलकर सुलेमान ने उसको सेना सहित खदेड देने में सफलता पाई किन्तु दूसरी ओर 29 मई 1658 को दारा की सेनाएं आगरा से आठ कोस की दूरी पर आगरा की तरफ बढ़ती औरंगजेब तथा मुराद की संयुक्त सेनाओं का मुकाबला करने में असफल हुईं तथा सामूगढ़ नामक स्थान पर पराजित हुई। दाराशिकोह अपनी बची खुछी सेना के साथ आगरा तथा दिल्ली होता हुआ लाहौर पहुंच गया तथा वहां पर पुनः युद्ध की तैयारी के उद्देश्य से सेना का संगठन करने के असफल प्रयास में जुट गया।

दाराशिकोह के पुत्र सुलेमानशिकोह ने अपने पिता की पराजय का समाचार उस समय जाना जब वह इलाहाबाद के निकट था। किन्तु इसी समय उसके विश्वासपात्र साथी राजा जयसिंह तथा दिलेरखां उसका साथ छोडकर चले गयें तथा अपनी–अपनी सेनाओं सहित उससे अलग हो गए, अब उसके साथ उसका संरक्षक बाकीबेग तथा छः सहस्र सैनिक ही रह गए।[7]

बर्नियर के अनुसार सेना का एक बडा भाग जयसिंह तथा दिलेरखां के अधीन था। जो कि उसे छोड़कर तथा उसका बहुत सा माल असबाब लूटते हुए उसे छोडकर चले गए।[8] सुलेमान के लिए अब अकेले ही औरंगजेब की विशाल सेना से टकराना सम्भव नही था। अतः उसने हरिद्वार में गंगा को पार कर सहारनपुर के मार्ग से होते हुए अपने पिता तक पहुंचने का विचार किया।[9] सच्चे हितैशियों, सैयदों और कितने ही ऐसे लोगों ने जिनकी अवश्य ही साथ जाने की इच्छा थी इस यात्रा मे उसका साथ दिया। नगीना होता हुआ सुलेमान शिकोह हरिद्वार पहुंचा किन्तु अब तक औरंगजेब उसका मार्ग रोकने तथा उसे पकडने के लिए पर्याप्त व्यवस्था कर चुका था। औरंगजेब ने शायस्ताखां को गंगा जी के पत्तनों तथा शेख मीर को यमुना के पत्तनों की रक्षा हेतुं नियुक्त किया[10] । उसे पकड़ने के लिये फिदा खां हरिद्वार की ओर चल पड़ा।[11] इन सब समाचारों को सुनकर सुलेमान के हौसले पस्त हो गए तथा उसने गंगा को पार कर पंजाब पहुंचने का विचार त्याग कर श्रीनगर के राजा के यहां शरण लेने का निश्चय किया। इसी बीच उसके परम् सहायक बरहा के सैयद उसका साथ छोड़कर चले गए अब उसके साथ केवल दों सहस्र लोग ही रह गए थे।[12]

श्रीनगर गढवाल के राजा ने शहजादे को बिना सैनिकों के ही केवल अपने परिजनो तथा सत्रह सेवकों के साथ अपने राज्य में शरण देने की शर्त रखी। अतः शहजादा सुलेमान अपने सहयोगियों तथा सैनिकों के साथ वापस इलाहाबाद के लिए लौट चला। किन्तु नगीना में उसके कुछ साथियों ने ही उसका बहुत सा खजाना लूट लिया, उसके विभिन्न विभागों के सेवक, सामग्री के वाहक, ऊटों तथा हाथियों के हांकने वाले अपने स्वामी को छोड़कर भाग गए। उसके साथ अब लगभग दो सौ सहयोगी तथा उसके हरम

की दौ सौ नारियां थी। मुरादाबाद का जागीरदार कासिमखां उसे पकडने के लिए चल पडा था अतः उसने लौटने का विचार त्याग कर गढ़ राज्य में ही शरण लेने का निश्चय किया। बड़ी संख्या में लोगों को साथ ले जाना सम्भव नही जानकर बहुत से प्रियजनों को रोता बिलखता छोड़कर तथा हरम की प्रमुख नारियों को साथ लेकर सुलेमान पहाडी रास्तों की ओर भागा।[13] अगस्त सन् 1658 मे जब सुलेमान गढ़वाल के राजा की शरण में पहुंचा तो उसके साथ उसकी कुछ बेगमें तथा सत्रह अन्य लोग थे।[14] किसी प्रकार वह अपनी बेगम व बाल–बच्चों को साथ में लिए श्रीनगर पहुच गया।[15]

यहाँ पर सुलेमान की पलायन यात्रा का दर्शन विभिन्न यूरोपीय तथा फारसी स्रोतों के माध्यम से करने का उद्देश्य यही देखना था कि सुलेमान की यात्रा का उल्लेख करने वाले किसी समकालीन स्रोत में ष्यामदास तथा केहरदास का नामोल्लेख है अथवा नहीं किन्तु कोई भी समकालीन स्रोत उनके नाम का उल्लेख नहीं करते। खाफी खां सुलेमान के साथ गढ़राज्य पंहुचने वालों में मुहम्मदशाह कोका के नाम का जिक्र करता है किन्तु श्यामदास का कोई नहीं, ना ही कोई समकालीन लेखक श्रीनगर में सुलेमान के साथ शरण लेने वालों में किसी चित्रकार के होने की बात कहता है।

मौलाराम के पूर्वज श्यामदास तथा हरदास के विषय में एक मात्र प्रमुख स्रोत मौलाराम द्वारा लिखित काव्य है, यद्यपि यह समकालीन नही किन्तु मौलाराम के कथन के कारण ही हम यह मानते है कि उनके पूर्वज ष्यामदास तथा उनका पुत्र हरदास सुलेमान शिकोह के साथ गढ़वाल आए थे।

दिल्ली आद निवास है, तूंवर हमारी जात
आये है गढ़वाल महि, सलेमशाह के साथ[16]

मौलााम से ही हमें उनके पूर्वजों के सुलेमानसिकोह के साथ गढ़राज्य पंहुचने की सूचना मालूम चलती है अतः इस सम्बन्ध में मोलाराम द्वारा ष्यामदास तथा केहरदास के विषय में प्रदत्त जानकारी का विश्लेषण करना आवश्यक है यह जानने के लिये कि मोलाराम उनके विषय में क्या कुछ कहते हैं।

मौलाराम के अनुसार मौलाराम के पिता मगंतराम ने उनको यह बताया कि उनके पिता हीरानन्द हरदास के तथा हरदास श्यामदास के पुत्र थे।[17]

हीरानंद हमरे पिता सुत केहरदास[18] के वो जग माही
श्यामसिंहदास भये तिनके पिता सो आये गढ़वाल के तांही।

मौलाराम अपने इन पूर्वजों के विषय में आगे भी बहुत सी जानकारी उपलब्ध कराते हैं, मौलाराम के अनुसार गढ़ नरेश ने उनके पूर्वजों को सलाह दी कि यदि वे सुलेमान के साथ वापस जाएंगे तो या तो मार डाले जाएंगे या सारी जिन्दगी कैद में ही गुजारनी पड़ेगी तथा ऐसा समझाकर उन्हें श्रीनगर में ही रोक लिया।[19]

श्यामदास अरू केहरदास ही पिता पुत्र दोउ राखे पासे हि
तूंवर जान दिवान हि जाने राखे हित सौ अत सनमाने [20]
तब सौ हम गढ़ माहि रहाये। हमरे पुरखा या विद आये।
तिनके बंस जनम हम धारा। मौलाराम है नाम हमारा।

मौलाराम के अनुसार गढ़ नरेश ने उनके पूर्वजो को 'तूंवर' जाति का होने के कारण एक दीवान

के बराबर का ही दर्जा दिया तथा अपने राज्य में अत्यंत सम्मान के साथ रखा। उन्हें साठ गाँव की जागीर प्रदान की। इसी स्थान पर मौलाराम एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य उजागर करता है कि गढ़ नरेश द्वारा फारसी सीखने हेतु उनके पूर्वजों को गुरू बनाया गया।

साठ गॉउ जागीर ही दीन्है, अपने वह उस्ताद हि कीनै
पढ़ी फारसी तिनके पास हि। रहे होय जो तिनके दास हि।[21]

फारसी सीखने के लिए गढ़ नरेश द्वारा मौलाराम के पूर्वज को गुरू बनाए जाने का मौलाराम उल्लेख करता है किन्तु वह फारसी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य शिल्प अथवा कला की दक्षता को अपने पूर्वजों से नही जोड़ता। यद्यपि एक स्थान पर वह उनके 'इल्मदार' दीवान होने की बात तो कहता है किन्तु फारसी भाषा के अतिरिक्त वह अपने पूर्वजों के अन्य 'इल्मों' की जानकारी के विषय में मौन हैं।

इल्मदार दीवान लखाये सो हित सौं या विद समझाये[22]

ध्यान देने की बात है कि मौलाराम ने किसी भी स्थान पर यह नहीं कहा है कि उनके पूर्वज श्यामदास और केहरदास चित्रकार थे।

मुकन्दी लाल ने अपनी पुस्तक 'गढ़वाल चित्रकला' में लिखा है कि 'मौलाराम के पूर्वज गढ़वाल में चित्रकला के जन्मदाता श्यामदास व हरदास श्रीनगर गढवाल में रह गए, उनको राजा ने चित्रकार पद पर नियुक्त कर दिया तथा उनके लिए अपने दरबार में 'तस्वीरदार' का एक नया पद नियत किया'।[23] अपनी बात के समर्थन में मुकन्दी लाल ने किसी भी प्रकार का कोई समकालीन स्रोत, लोक अनुश्रुति अथवा मौलाराम का कोई कथन उद्धृत नही किया है। मुकन्दी लाल के इस कथन के कारण ही सम्भवतः यह धारणा कि ष्यामदास व केहरदास एक दक्ष चित्रकार थे, धीरे–धीरे लोकप्रिय होती चली गई। नए आने वाले लेखक बिना पडताल तथा विश्लेषण के इस कथन को दोहराते गए और यह धारणा गढ़वाल चित्रकला के इतिहास लेखन का एक अभिन्न सा हिस्सा बन चली।

इस सम्बन्ध मे भक्तदर्शन महोदय के कथन का परीक्षण भी अभीष्ट जान पड़ता है। भक्तदर्शन ने मौलाराम के पूर्वजों को स्वर्णकार कहा है, उन्हें चित्रकार साबित करने के लिये उन्होंने जो तर्क प्रस्तुत किया है वो इस प्रकार है, 'सभी हिन्दू चित्रकार विशेषकर राजपूत शैली के चित्रकार पेशे से स्वर्णकार ही थे लेकिन साथ ही कला साधना भी किया करते थे'।[24] भक्तदर्शन के कथन से स्पष्ट है कि उनके पास मौलाराम के पूर्वजों ष्यामदास तथा हरदास के पेशेवर चित्रकार होने के विषय में कोई स्पष्ट सूचना नहीं है उनका तर्क विचित्र है भक्तदर्शन, मौलाराम के पूर्वजों को पहले स्वर्णकार बताते हैं और फिर सभी हिन्दू चित्रकारों को भी स्वर्णकार बताते हुए मौलाराम के पूर्वजों के चित्रकार होने के निष्कर्ष तक पहुंचते हैं किन्तु उनका यह कथन भी कि 'राजपूत शैली के सभी हिन्दू चित्रकार पेशे से स्वर्णकार ही थे' समझ से परे है, यदि उनके इस कथन को एक बार सही मान भी लिया जाए तो भी इससे उनके द्वारा निकाला गया निष्कर्ष सिद्ध नहीं होने पाता क्योंकि सभी चित्रकारों के स्वर्णकार मान लिये जाने से भी सभी स्वर्णकार चित्रकार सिद्ध नहीं हो जाते दूसरा भक्तदर्शन ने मौलाराम के पूर्वजों को किस आधार पर स्वर्णकार ही माना है, वे यह भी स्पष्ट नहीं करते। इतिहास में अनुमान तथा अवधारणाओं के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता, वास्तव में इतिहास तथा विज्ञान दोंनो अवधारणाओं के सहारे ही आगे बढ़ते हैं किन्तु जिस प्रकार

विज्ञान सम्बन्धी अवधारणा का प्रायोगिक परीक्षण में खरा उतरना आवष्यक है उसी प्रकार इतिहास सम्बन्धी अनुमानों का भी प्रमाणों द्वारा पुष्ट किया जाना आवश्यक बाध्यता है। मुकन्दी लाल तथा भक्तदर्शन दोनों ही महानुभाव अपने अनुमानों को प्रमाणों से पुष्ट कर पाने के बिना ही वांछित निष्कर्ष तक पहुंच जाने का उद्योग करते दिखाई देते हैं।

मौलाराम के पूर्वज ष्यामदास को कतिपय विद्वान शाहजहां के दरबार से अथवा शाहजहां के दरबारी चित्रकार बनवारी दास से भी जोड़ते आए है।[25] किन्तु इसके लिए भी किसी समकालीन फारसी स्रोत का उल्लेख कभी नहीं किया गया और न ही मौलाराम ने अपने लेखन में अपने पूर्वजों को शाहजहां के दरबार के किसी चित्रकार से जोड़ा है। जहाँ तक मौलाराम का प्रश्न है वह अपने पूर्वज ष्यामदास व हरदास को न तो चित्रकार कहता है और न मुगल दरबार के किसी चित्रकार से ही जोड़ता है वह अपने पूर्वजों को जोड़ता भी है तो उन तूंवरों से जो कि किसी समय दिल्ली तथा आस पास के क्षेत्रों में तूंवर वंषीय राजा अरणपाल के नेतृत्व में राज कर रहे थे।

अरणपाल दिल्ली को राजा। तूंवर जात करै सुभकाजा।
तिन्हू नूतन महल बनाये। व्यास वशिष्ट गौतम हि बुलाये।'[26]

हमारे पास ऐसा कहने की भी कोई वजह नहीं कि मौलाराम के ये पूर्वज चित्रकार नही हो सकते, एक चित्रकार के पूर्वजों के भी चित्रकार होने की संभावना तलाशने मे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए किंतु, यह सभावना एक तथ्य बनने के लिए अलग से वस्तुनिष्ठ प्रमाणों की मांग करती ही है। हमारा आशय मात्र इतना है कि मौलाराम के पूर्वजों को चित्रकार कहे जाने की बात की पुष्टि उनके समकालीन फारसी स्रोतों तथा मौलाराम के अब तक प्रकाश में लाये गये काव्य के आलोक में नहीं होने पाती है। सुलेमान शिकोह की गढ़राज्य में शरण का उल्लेख करने वाली किसी भी समकालीन रचना मे फिलहाल ष्यामदास और हरदास का कोई जिक्र नहीं मिलता। उनके विषय में जो कुछ भी सूचनायें प्राप्त होती है वह एकमात्र स्रोत मौलाराम का साहित्य ही है किन्तु मौलाराम भी किसी स्थल पर उनको चित्रकार नही कहता।

ष्यामदास और हरदास का बनाया हुआ कोई चित्र भी आज तक खोज नहीं निकाला गया। उनको चित्रकार कहते हुए अनुमान तथा सामान्यीकरण जैसे जिन उपकरणों का सहारा लिया गया है उनके पीछे प्रमाणों की कोई आधारशिला नहीं दिखाई पड़ती। वास्तव मे जब तक समकालीन किसी स्रोत के द्वारा पुष्टि अथवा ष्यामदास तथा हरदास का बनाया गया कोई चित्र या फिर मौलाराम का ही कोई कथन[27] अथवा ऐसा कोई सूचना स्रोत जो इस सम्बन्ध में युक्तियुक्त समीकरण स्थापित करे सामने नहीं लाया जाता तब तक ष्यामदास तथा हरदास के पेशेवर चित्रकार होने की बात एक अवधारणा (Hypothesis) के रूप में ही वर्तमान कही जाएगी, पहाड़ी अथवा गढ़वाल चित्रकला के एक प्रमाणित एंव प्रमाणिक तथ्य के रूप मे नहीं।

सन्दर्भ सूची

1. डा. यशवंत सिंह कठोच, 'उत्तराखण्ड संस्कृति', पृष्ठ 18 वाचस्पति गैरोला, 'भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास' पृष्ठ 89

डा. एस. ए. एच. जैदी, श्रीमती रेहाना जैदी, 'गढ़वाल मुगल सम्बन्ध' पृष्ठ 155

2. इनायत खा, शाहजहांनामा, इलियट एवं डाउसन (हिन्दी अनुवाद) खण्ड–7 पृष्ठ 74–75
3. खाफीखां मुन्तखब–उल–लुबाब, इलियट एवं डाउसन हिन्दी अनुवाद मथुरा लाला शर्मा पृष्ठ 152–153
4. खाफीखां, वही उपरोक्त पृष्ठ
5.खाफीखां, वही उपरोक्त पृष्ठ
6.डा. कालिका रंजन कानूनगों एवं डा. र. चं. मजमूदार, 'दाराशिकोह', पृष्ठ 107
7.जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, जिल्द–2 पृष्ठ 223
8. फ्रैंक्विस बर्नियर 'ट्रैवल्स इन मुगल एम्पायर', अनुवाद, बाबू गंगा प्रसाद गुप्त पृष्ठ 63/64 नई दिल्ली 2002
9.मुन्शी देवी प्रसाद, औरंगजेबनामा पृष्ठ–7, सम्पादन अशोक कुमार सिंह, वाराणसी, 2001
10.जे.एन. सरकार, हिस्ट्री ऑफ औरगंजेब, जिल्द 2 पृष्ठ 226; मुन्शी देवी प्रसाद वही, पृष्ठ 7
11.राहुल साकृंत्यायन, हिमांचल खण्ड–1 पृष्ठ 24
12.सरकार, पूर्वोक्त, पृष्ठ; 227
13.सरकार पूर्वोक्त, पृष्ठ 229
14.सरकार वही
15.फ्रैंक्विस बर्नियर, वही पृष्ठ 63,64 नई दिल्ली 2002
16.मोलाराम ने कतिपय स्थलों पर सुलेमान के लिए सलेमशाह शब्द का भी प्रयोग किया है। यह समझने की भूल नही होनी चाहिए कि मौलाराम ने सुलेमानशिकोह तथा सलीम (जहांगीर) के मध्य अन्तर करने में भ्रम किया है। वस्तुतः मौलाराम सुलेमान शिकोह के किरदार से भली भाँति परिचित था उसने सुलेमान के विषय में लिखते हुए सलेमशाह नाम का भी प्रयोग किया। अनेक स्थलों पर उसने उसके विशय में लिखते हुए सुलेमान शिकोह नाम का भी प्रयोग किया है। इससे भ्रम की स्थिति नही रह जाती। देखिए, मौलाराम ग्रन्थावली, पृष्ठ 26, यथा-श्यामदास अरू केहरदास सिंह। रहे सुलेमां सुको के पास हि।
17.मौलाराम ग्रन्थावली पृष्ठ 21
18.मोलाराम के अध्येताओं ने जिनके लिए हरदास नाम का प्रयोग किया है मोलाराम उनके लिए केहरदास नाम का प्रयोग करते है।
19.उत्तराधिकार के संघर्श में औरंगजेब की स्थिति सुदृढ़ हो जाने के पश्चात् उसने गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह पर सुलेमानशिकोह को मुगल अधिकारियों को सौंप देने के लिए कूटनीतिक तथा सैनिक दबाव बनाने प्रारम्भ किए अन्त तोगत्वा उसे सफलता मिली तथा वह शहजादे को हस्तगत करने में सफल हुआ।
20.उपरोक्त पंक्ति का भिन्न विद्वानों की रचनाओं में भिन्न पाठ प्राप्त होता है हमने अपने विवेकानुसार यहां पर मुकन्दी लाल द्वारा लिखित 'अत सनमाने' शब्दों को लिया है क्योंकि गढ़नरेश ने स्वाभाविक रूप सेश्यामदास तथा उनके पुत्र को जब स्वयं ही रूकने को कहा था तो उन्हे सम्मानपूर्वक ही अपने राज्य मे स्थान दिया होगा।

देखिए मौलाराम ग्रन्थावली पृष्ठ 30–'राखे हित सौं अत अनमाने'

गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां' भाग 1 पृष्ठ 88–'राखे हित सौ अत मनमाने''

21.मोलाराम ग्रन्थावली पृष्ठ 30 सम्पादन शिव प्रसाद डबराल, दोगडा, 1977 मौलाराम ग्रन्थावली की प्रस्तावना में डबराल महोदय का कथन है कि इसमे मोलाराम के तीन काव्य मगतराम–मौलाराम सवांद; गढ़राजवशंकाव्य; तथा सुदर्शन दर्शन प्रकाशित किए गए हैं किन्तु डबराल महोदय का यह कथन विरोधाभाषी है क्योंकि स्वयं डबराल महोदय द्वारा अपने ग्रन्थ उत्तराखण्ड का इतिहास भाग–1 में गढ़राजवशंकाव्य के स्थान पर उक्त काव्य के लिए 'गढराजवंश का इतिहास' नाम सम्बोधित किया गया है। देखिये डबराल, 'उत्तराखण्ड का इतिहास' भाग–1, पृष्ठ 13

22.वही पृष्ठ 30

23.मुकुन्दी लाल, 'गढवाल चित्रकला' पृष्ठ 2

24.भक्तदर्शन, गढ़वाल की दिवगंत विभूतियां, भाग–1, पृष्ठ 89

25.भक्तदर्शन, 'गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां' भाग–1 पृश्ठ 87, वाचस्पति गैरोला, वही पृष्ठ 89, डॉ. यशवन्त सिंह कठोच, 'उत्तराखण्ड संस्कृति' पृष्ठ–18, गढ़वाल और गढ़वाल पृष्ठ 102

26.मौलाराम ग्रन्थावली पृष्ठ 21

27.मौलाराम की रचनाओं में अब तक गणिका नाटक ही प्रकाश में आ पाया है जिसका प्रकाशन डॉ0 अजय रावत द्वारा किया गया है। गढ़वाल के राजाओं से सम्बन्धित उनका थोड़ा सा साहित्य डॉ0 शिव प्रसाद डबराल द्वारा मौलाराम ग्रन्थावली के नाम से प्रकाशित तथा सम्पादित किया गया है। मौलाराम के साहित्य का बहुत थोड़ा भाग ही अभी प्रकाश में आ पाया है। विभिन्न लेखकों के लेखों में उनके इस अप्रकाशित साहित्य के अंश समय–समय पर देखने को मिलते हैं डॉ0 शिव प्रसाद डबराल द्वारा उत्तराखण्ड के इतिहास लेखन में मौलाराम की पाण्डुलिपियों से उद्धृत उद्धरणों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है। मौलाराम के इस अप्रकाशित साहित्य को खोजने तथा प्रकाश में लाने की आवश्यकता है इससे न सिर्फ मौलाराम के विषय में अपितु गढ़वाल के इतिहास के विषय में नवीन जानकारियां सामने आयेंगी।